कवि-परिचय :

नाम : राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी

जनम-तिथि : 28.12.1930

जनम-अस्थान : सैदनपुर, पो०-नंदलालापाद, गौरीचक, पटना

सिच्छा : आइ.ए.

उनकर मिरतु 2004 ई० बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पटना के प्रांगण में स्थित आवास में हो गेल। उनकर पिता के नाम चंद्रिका सिंह हल।

1949 ई० में पटना विस्वविद्यालय से आइ.ए.के परिच्छा पास कयलन हल। ऊ महाकवि निराला जइसन अक्खड़ सुभाव के फक्कड़ कवि हलन। एगो मगही में कविता संगरह (जगरना) लिख के ऊ मगही साहित जगत में अमर हो गेलन। उनकर कविता में परकिरती आउ, किसान के दु:ख भरल जीवन के बरनन हे। ऊ किसान आउ नवजवान के जागरन के गीत लिखके मगही साहित के भंडार भर देलन।

'इसरा महादे' सीर्सक कविता में ऊ किसान जीवन के एगो जथार्थ चित्रन कयलन हे। किसान, खेत, खरिहान, बिया, बिहन, इसरा आउ सहादे के अइसन बरनन कयलन हे कि सब कुछ आँख के सामने एगो चित्र जइसन आ जा हे।

किसान के जीवन केतना मेहनती आउ करमठ होवऽ हे ओकर साफ-साफ चित्रन उनकर कविता में मिलऽ हे।

इसरा महादे

बैल धरफरायल
हर हरहरायल,
मारे टिटकारी सहादे
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल....

धइले सिराउर,
आ ठामे इसरा महादे!

तोरे पर 'दम' हे, तोरे पर 'हम' हे,
दिन बीत रहल हे पातर।
चल मोर सौंरा, चल मोर मैना;
कइले चल पूरा दू आँतर।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

अज्झुका काम आज्झे करऽ पूरा,
कल्हे पर करऽ नय भरोसा।
काहे कसरायल तेजी देखइते चल,
फिन न पलटतइ पासा।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल....

आसकत पूते किसाने नासे हे,
मत बन तू अलुआरासी।
खेत उखरतउ रहमे कहीं के न,
भागमे फिन गाँव छोर कासी।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

नगिचल दिन, मारले चल हो भोला,
न तो अइतउ साँझ अन्हरिया।
बनतउ जपाल जिनगी सब सुन्हाके,
लउकतउ न अप्पन डगरिया।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

बपकल चलऽ हो हरदेव एतना-सा
वसुधा के छोड़ नय भीठ।

जानल-बुझ्झल हमनीके कुरुअखेत,
आगे चल बन के तू ढीठ।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

लपकल चल, झपकल चल सोना,
बढ़ल चल जमीं पर चाटी बाज के।
तोरे परेरना रचिअइ कविता,
धरती के पाटी पर नाज के।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

तू ही मोर हाथ-गोर, तोरे पर
बान्हले हिआव ही कसके।
फाँद दिवाल जस सामकरन घोड़ा,
रहे न घोड़सार के बस के।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

करऽ समांग अइसन कि माला बाजे,
मसूर गाजे खरिहानी।
ड्योढ़ी बइठल गुरछिहऽ बसहा,
हम 'सहदेवा' बनब शिव-दानी।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

फेरबइ देन अब बियाहबइ बेटा,
भट्ठल घरवा हम उठायब।
तोरे कमाई पर भाईबन न्योतम,
बच्चल अन्न हम जुठायब।।
अररर, बढ़ल चल, चढ़ल चल...

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. इसरा महादे केकरा कहल गेल हे ?
2. ''अररर बढ़ल चल, चढ़ल चल'' के की माने हे ?
3. चल मोर सौंरा, चल मोर मैना... केकरा कहल गेल हे ?
4. गाँव छोड़ के कासी जाए के मतलब काहे ?
5. ''तोरे परेरना रचअइ कविता'' में कवि का कहेला चाह रहलन हे ?
6. किसान महादे के भरोसे कउन-कउन काम करेला चाह रहलन हे ?

लिखित :

1. किसान टिटकारी कब पारऽ हे, ओकर उद्देस्य बतावऽ।
2. इसरा महादे पर किसान के का-का भरोसा हे ?
3. किसान आज के काम आज्भे काहे करेला चाह रहल हे ?
4. किसान के अप्पन डगर कब न सूझत ?
5. आसकत पूते किसाने नासे के भाव बतावऽ ।
6. किसान केकरा पर हिआव बान्हले हे आउ काहे ?
7. नीचे लिखल के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

फेरबइ देन, बियाहबइ बेटा,
भट्ठल घर हम उठायब।
तोरे कमाई पर भाईबन न्योतम,
बच्चल अन्न हम जुठायब।
अज्भुका काम आज्भे करऽ पूरा,
कल्हे पर करऽ नय भरोसा।

भासा-अध्ययन :

1. इसरा महादे कविता के सिल्प आउ भाव-सौंदर्य बतावऽ।
2. नीचे लिखल सबद के सहचर सबद बतावऽ

(क) जानल .....

(ख) खेत .....

(ग) साँझ .....

(घ) लपकल .....

(च) जमीं .....

योग्यता-विस्तार :

1. इसरा महादे कविता से संबंधित कोई दोसर कविता चुन के लावऽ आउ ओकर काव्य पाठ कवि गोस्ठी में करऽ।
2. खाँटी मगही सबद के एगो सूची बनाके सिच्छक के देखावऽ।

सब्दार्थ :

आसकत	:	आलसी
बमकल	:	जोस में, मन बढ़ल
ठामे	:	नजदीक में
पातर	:	पतला
लपकल	:	तेजी से
हिआव	:	साहस
ड्योढ़ी	:	घर में जायेवाला रस्ता
भट्ठल	:	बिगड़ल, टूटल